A **(Printed Pages 3)**

Roll No. _____

A-258

बी.ए. (प्रथम वर्ष) परीक्षा, 2015

ज्योतिर्विज्ञान

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(संहिता ज्योतिष तथा भारतीय ज्योतिष का इतिहास)

समय - तीन घण्टे **पूर्णांक - 50**

नोट : केवल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिये। **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है। प्रत्येक वर्ग से **एक** प्रश्न करना आवश्यक है।

1. अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए? $2\times10=20$

   (क) शीघ्रबोध के रचनाकार का नाम लिखिए? ग्रन्थारम्भ में रचनाकार ने किसकी वन्दना की है?

   (ख) शीघ्रबोध में प्रोक्त वैवाहिक नक्षत्र बताइए?

   (ग) वर-कन्या के वर्ण-विषयक अभिमत को व्यक्त कीजिए?

   (घ) विवाह में विचारणीय पातदोष से क्या अभिप्राय है?

   (ङ) जामित्र-सञ्ज्ञक दोष से क्या आशय है?

   (च) अन्नप्राशन में ग्राह्य नक्षत्र बताइए?

(छ) वास्तुकर्म-हेतु प्रशस्त नक्षत्रों के नाम लिखिए?

(ज) वृहस्पति तथा शनि की राशि-भोग की अवधि बताइए?

(झ) आर्यभट्ट-प्रथम तथा द्वितीय की एक-एक रचना बताइए?

(ञ) सिद्धान्त शिरोमणि तथा बृहत्संहिता के लेखक कौन हैं?

प्रथम-वर्ग

2. शीघ्रबोध के अनुसार विवाह में विचारणीय मुहूर्त सम्बन्धी अभिमत की विवेचना कीजिए? 7½

3. अधोलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए– 7½

तिथिवीरं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्।
द्वित्तिचतुर्भिर्गुणितं रससप्ताष्टभाजितम्।।
आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये रिपोर्भयम्।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वाङ्के विजयीभवेत्।।

द्वितीय - वर्ग

4. शीघ्रबोध के विशिष्ट आलोक में ग्रह-शान्ति हेतु निर्धारित दान-द्रव्यों पर प्रकाश डालिए? 7½

5. अधोलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए– 7½

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः।
शस्त्रकोपैःक्षयं यान्ति तदा भीतिः परस्परम्।।
ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ।
सर्वग्रस्तौ चन्द्रसूर्यौ दुर्भिक्षमरणप्रदौ।।

तृतीय - वर्ग

6. भारतीय-ज्योतिष के इतिहास में रामायणकालीन ज्योतिष का स्वरूप तथा महत्त्व निरूपित कीजिए? 7½

7. ऋग्वेद-ज्योतिष अथवा आर्च-ज्योतिष का स्वरूप तथा महत्व अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।? 7½

चतुर्थ - वर्ग

8. भारतीय ज्योतिष के विकास में कमलाकर-भट्ट के योगदान पर प्रकाश डालिए? 7½

9. होरास्कन्ध के किसी एक ज्योतिर्विद् के योगदान को निरूपित कीजिए? 7½